मोह, लोभ, हिंसा से अंधायुग में बदल गया द्वापर

बरेली। असत्य के शोर में जब सत्य खोने लगे, मोह जब आशक्ति में बदल जाए, मर्यादाएं तार तार होकर टूटने लगें। नैतिकता जब सिर्फ दूसरों के उपदेश की बात हो जाए तब द्वापर के बाद शुरू होता है अंधायुग। इन्हीं भावनाओं को समेटे महाभारत युद्ध के 17वें दिन के बाद बुधवार को एसआरएमएस रिद्धिमा में मंचन हुआ। अंबुज कुकरेती के निर्देशन में धर्मवीर भारती के नाटक अंधायुग ने दर्शकों के सामने रिद्धिमा में नया मुकाम हासिल किया। नाटक में अश्वत्थामा की भूमिका अजय चौहान, धृतराष्ट्र की आशीष कुमार, गांधारी की कृति, संजय की पंकज कुकरेती, विदुर की मोहसिन खान, कृपाचार्य की भूमिका गौरव धीरज और कृतवर्मा की भूमिका जितेंद्र व शंकर की भरतनाट्यम गुरु अंबाली प्रहराज ने निभाकर सभी को आश्चर्य चकित कर दिया। एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ऋचा मूर्ति, इंजीनियर सुभाष मेहरा, डा .प्रभाकर गुप्ता, डा .अनुज कुमार, डा .राघवेंद्र शर्मा, डा .दीप शिखा शर्मा मौजूद रहे।